श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति,
राजस्थान का उद्‌बोधन

महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय,बीकानेर के व्याख्यानमाला

की विडियों कॉन्फ्रेसिंग

दिनांक – 03 अक्टूबर, 2020 **समय – दोपहरः 01. 00 बजे**

स्थान – राजभवन

महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर द्वारा आयोजित ''महाराजा गंगा सिंह मेमोरियल व्याख्यानमाला में उपस्थित श्री भंवर सिंह जी भाटी, उच्च शिक्षा राज्य मंत्री, राजस्थान सरकार, मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित प्रो. कपिल कपूर, प्रो. बी.एल. भादाणी, विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विनोद कुमार सिंह, ऑनलाइन एव ंऑफलाइन उपस्थित महानुभावगण, प्राध्यापकगण, विद्यार्थियों, भाइयों और बहिनों।

सर्वप्रथम मैं महाराजा गंगा सिंह जी को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए सादर वन्दन करता हूँ। शैक्षणिक, प्रशासनिक सुधार एवं विकास की गंगा बहाने के लिए महाराजा गंगा सिंह जी को आधुनिक सुधारवादी एवं भविष्यदृष्टा के रूप में याद किया जाता है। स्वयं सुशिक्षित एवं प्रशंसनीय शिक्षानुरागी महाराजा गंगा सिंह जी ने विपरीत परिस्थितियों में अनवरत, संघर्षरत रहकर शिक्षा की प्रगति में विशेष रूचि ली।

शिक्षा को जन–जन तक पहुंचाना महाराजा गंगा सिंह जी का विशेष उद्देश्य रहा। महाराजा गंगा सिंह जी का ऐसा विश्वास था कि आम नागरिक अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह तभी कर सकते हैं जब उन्हें शिक्षा का अवसर मिले।

महाराजा गंगा सिंह जी की ऐसी धारणा थी कि राज्य की नौकरियों में नियुक्ति का प्रथम अधिकार राज्य के नागरिकों का ही है, परन्तु नागरिक अपने इस प्रथम अधिकार को व्यवहार में तभी प्राप्त कर सकते हैं, जबकि वे इसके लिए योग्य व शिक्षित बनें। महाराजा गंगा सिंह जी ने नारी शिक्षा को विशेष महत्व दिया तथा इसकी प्रगति हेतु प्रभावी कदम उठाये। आपको यह जानकारी देना चाहूंगा कि महाराजा गंगा सिंह ने 45 वर्ष के शासनकाल में बीकानेर राज्य में शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति करते हुए सम्पूर्ण राज्य में शिक्षण संस्थाओं का जाल बिछा दिया।

महाराजा गंगा सिंह जी ने उस समय शिक्षा की प्रगति के लिए योजनाबद्ध कार्यक्रम निर्माण, क्रियान्वयन एवं निरीक्षण आदि का समुचित प्रबन्ध किया। इसी का परिणाम था कि सन् 1928 में बीकानेर में डूंगर मेमोरियल इण्टरमीडिएट कॉलेज की स्थापना हुई। महाराजा गंगा सिंह जी बीकानेर इतिहास के प्रथम शासक थे, जिन्होंने राज्य के विकास, आधुनिकीकरण व जनकल्याण हेतु शिक्षा की प्रगति को प्राथमिक अनिवार्यता मानकर रियासत में शिक्षा की प्रगति के कठिन कार्य को संभव कर दिखाया। उनके अथक प्रयासों ने राज्य को शैक्षणिक पिछड़ेपन के अंधकारमयी युग से शैक्षणिक प्रगति के प्रकाशपुंज से दैदिप्यमान युग में ला खड़ा किया।

बीकानेर राज्य की शिक्षा प्रणाली में एक उल्लेखनीय विशिष्टता यह थी कि राज्य में शिक्षा निःशुल्क प्रदान की जाती थी एवं समसामयिक भारतीय रियासतों में निःशुल्क शिक्षा प्रदान करने की दृष्टि से उल्लेखनीय तीन रियासतों (कोटा, नवानगर, बीकानेर) में से बीकानेर एक थी।

महाराजा के सतत् प्रयत्नों से शिक्षण संस्थाओं की संख्या में अद्वितीय कीर्तिमान स्थापित किया। शिक्षानुरागी महाराजा गंगा सिंह का बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से गहरा सम्बन्ध था। वे 1922 से 1928 तक इस विश्वविद्यालय के प्रोफेसर रहे तथा 1929 से लेकर 1943 में अपनी मृत्यु के समय तक इस विश्वविद्यालय के कुलपति रहे।

मुझे यह जानकर अत्यन्त खुशी हुई कि आज महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर द्वारा महाराजा गंगा सिंह जी की जयन्ती पर ''महाराजा गंगा सिंह मेमोरियल व्याख्यानमाला'' का आयोजन किया जा रहा है। इसके लिए मैं कुलपति प्रो. विनोद कुमार सिंह एवं उनकी आयोजक टीम को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ। ।

महाराजा गंगा सिंह विष्वविद्यालय, बीकानेर, 17 वर्ष की अवधि में वट वृक्ष बनकर पश्चिमी राजस्थान के रेगिस्तानी भू–भाग में शिक्षा एवं शोध का प्रसार कर रहा है।

कोविड–19 जैसी विपरीत परिस्थितियों में भी विश्वविद्यालय के शिक्षकों ने ऑनलाईन प्लेटफार्म के माध्यम से अपनी शैक्षणिक यात्रा को अनवरत जारी रखा है। इन विपरीत परिस्थितियों में विद्यार्थियों को कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़े, इसके लिए विश्वविद्यालय द्वारा सतत् रूप से वैकल्पिक माध्यमों का प्रयोग कर अध्यापन जारी रखना एक सराहनीय पहल है।

आने वाले समय में परिस्थितियों के अनुरूप विद्यार्थियों को अध्ययन में किसी प्रकार की कठिनाई न हो, इसके लिए यहां के शिक्षक एक ऐसी कार्ययोजना तैयार करें जिससे गांव व ढाणी तक रहने वाला हमारा विद्यार्थी उच्च शिक्षा से वंचित न रहे। विश्वविद्यालयों से यह अपेक्षा है कि वे ऐसे शोध कार्य करें, जिससे विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा का महत्वपूर्ण केन्द्र साबित हो और शोध के ऐसे परिणाम आयें जो आमजन के लिए उपयोगी साबित हों।

कोविड जैसी महामारी के कारण पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था पर दुष्प्रभाव पड़ा है। माननीय प्रधानमंत्री जी के ''वोकल फॉर लोकल'' अपील पर भारत में स्वदेशी का भाव बहुत तीव्रता से जागृत हुआ है। वैश्वीकरण के बाद के युग की बाजार संचालित अर्थव्यवस्था के दुष्परिणाम यथा आय असमानता, बेरोजगारी, पर्यावरण प्रदूषण व हमारे स्वास्थ्य और संस्कृति के क्षरण के रूप सामने आ रहे हैं। इन समस्याओं का समाधान विकास की स्वदेशी संकल्पना द्वारा ही किया जा सकता है।

आज ज्यादा से ज्यादा लोगों में स्वदेशी के भाव के प्रति जागृति पैदा करना आवश्यक है। स्वदेशी नीतियों के प्रति देश में सकारात्मक वातावरण बने, आर्थिक नीतियां हमारे अधिशेष व घाटे वाले क्षेत्रों के मद्देनजर बनाई जाएँ व अन्तोत्गत्वा विकास का स्वदेशी संकल्प विकसित हो, जिससे देश व प्रदेश को आत्मनिर्भर बनाने में हम सब अग्रसर हो सकें।

मुझे यह अवगत कराते हुए अत्यन्त गर्व हो रहा है कि आज भारत विभिन्न क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर है। आज हमें, हमारे संकल्प को मजबूत करते हुए ''आपदा को अवसर'' के रूप में बदलना होगा। विश्व के सामने भारत एक आशा की किरण के रूप में नजर आता है। भारत की संस्कृति, भारत के संस्कार उस आत्मनिर्भर की बात में ''वसुधैव कुटुम्बकम'' के भाव को रखते है। भारत की आत्मनिर्भरता के मूल में संसार के सुख, सहयोग एवं शांति का भाव है, जो जीव मात्र का कल्याण चाहती है तथा पूरे विश्व को परिवार मानती है।

देश में शैक्षणिक विकास को नई ऊँचाइयों पर ले जाने के लिए नवीन शिक्षा नीति–2020 बनाई गई है। मानवीय क्षमताओं को पूर्णता तक ले जाने, समता मूलक समाज निर्माण और राष्ट्रीय विकास का मूल आधार शिक्षा है। मुझे आशा है कि भारत अगले 10 वर्षों में विश्व की सबसे बड़ी युवा शक्ति के रूप में विकसित होगा।

इस परिदृश्य में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आशा और आत्मविश्वास को जागृत करने के लिए एक सजीव दस्तावेज है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीयता को केन्द्र में रखकर विश्व का नेतृत्व कर सकने वाले नागरिक निर्माण का कार्य करेगी।

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय द्वारा नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 को विश्वविद्यालय स्तर पर प्रभावी रूप से क्रियान्वित कराने के लिए दिनांक 05–23 सितम्बर, 2020 की अवधि में ऑनलाईन लेक्चर सीरिज का आयोजन किया गया। इस सीरिज के माध्यम से देश–विदेश के शिक्षाविद्ों से प्राप्त सुझावों को संकलित कर विश्वविद्यालय सकारात्मक रूप से लागू करने का प्रयास करेगा, ऐसी मेरी अपेक्षा है।

विश्वविद्यालय परिसर में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के इण्डोर स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स व ऑडिटोरियम के निर्माण से विश्वविद्यालय का आधारभूत विकास होगा। साथ ही क्षेत्र के विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं खिलाड़ियों को इनसे लाभ मिलेगा एवं राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की शैक्षणिक संगोष्ठियां एवं खेलकूद गतिविधियाँ आयोजित करने का एक महत्वपूर्ण केन्द्र होगा।

मेरी विश्वविद्यालय से अपेक्षा है कि भविष्य में विद्यार्थी हित को सर्वोपरि मानते हुए शैक्षणिक एवं सामाजिक क्षेत्र में अपना महत्चपूर्ण योगदान प्रदान करें।

धन्यवाद। जयहिन्द।